International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 47-48

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 47-48
www.allresearchjournal.com
Received: 25-04-2015
Accepted: 24-05-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ढलियारा कांगड़ा हिमाचल प्रदेश ।

हिंन्दी काव्य में राष्ट्रीयता की भावना

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

वस्तुत : साहित्य तात्कालीन परिस्थितियों के साथ साथ मनुष्य के भावों की अभिव्यक्ति होती है कभी स्वान्त : सुखाय तो कभी उद्वेलित होकर कवि अपने भावों की सशक्त अभिव्यक्ति साहित्य में करता है। जो समाज के प्रतिनिधि बनकर सत्यचित्र को उभारने का उपक्रम करती है । कदा चित् कविता इस अभिव्यक्ति का सहज एवं सबसे सशक्त माध्यम है । भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में कविता का योगदान स्वयं प्रमाण है जो जनसाधारण को भी भावों में प्रेरित कर बीर पुरुष के रूप में प्रस्तुत कर सकने में सक्षम होती है । राष्ट्रीयता की भावना के बिना व्यक्ति नीरस एवं भाव – शून्य होता है। राष्ट्र शब्द रास अथवा राजृ धातृ से ऐटन प्रत्य के योग से बना है । शिवराम आपटे ने राष्ट्र शब्द को राज्य, देश, साम्राज्य राष्ट्र दुर्ग आदि के अर्थ में ग्रहण किया है ।

लेटिन के 'नेशियों ' शब्द से निकले अंग्रजी के नेशन शब्द के पर्याय के रूप में हिंदी का राष्ट्र शब्द प्रयुक्त होता है 'नेशियों ' का अर्थ है जन्म,या जाति । राष्ट्र से संबन्धित भावों को राष्ट्रीय कहा जाता है । विश्व की प्राचीनतम पुस्तक ऋग्वेद् में राष्ट्रीयता को भलीभांति ऋचाओं में अभिव्यक्त किया गया है । इसमें वरुण देवता को राष्ट्रों का स्वामी कहा गया है ।

यजुर्वेद में '' राष्ट्र मे देहि '' कहकर राष्ट्र प्राप्ति की कामना की गयी है । यजुर्वेद में स्पष्ट उल्लेख है की हम अपने देश में सावधान होकर उसकी रक्षा करें

वयंम् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहित : इन अनेक ऋचाओं में राष्ट्र के प्रति प्रेम और निष्ठा प्रकट की गयी है। अनेक ब्राहमण ग्रंथों में श्री वै राष्ट्रम् आदि के माध्यम से समृद्धियुक्त राष्ट्र की कामना की गयी है। रामायण और महाभारत में भी राष्ट्रीयता की भावना की अभिव्यक्ति हुई है । पुराणो और उपनिषदों एवम् श्रीमदभगवत् गीता में राष्ट्र, राष्ट्रीयता पर विशद चर्चा मिलती है विष्णु पुराण में तो भारत वर्ष की सीमाओं को भी स्पष्ट किया है ।

उत्तरं यत्समुद्रस्यहिमाद्रैश्चैवदक्षिणाम ।
वर्ष वद्भारतम् नाम भारतीयत्रसन्तति ।।

वास्तव में राष्ट्र शब्द भौगोलिक राजनैतिक तथा सांस्कृतिक एकता सदा से ही परिपक्व एवम् दृढ़ रही है ।

साहित्य में राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति धरती से प्यार के रूप में सांस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन पद्धति में आस्था के रूप में होती है । ऐतिहासिक उपलब्धियों एवमं मूल्यों को, राजनैतिक विजयों एवमं पराजयों को कवि सुख दुःख भरे गीतों एवं कहानियों में पिरोकर अपनी राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति करता है । पराधीन राष्ट्रों में जातीय गौरव का गुणगान, विदेशी सत्ता के दुर्गुणों एवम् अत्याचारों की भर्त्सना तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संर्घषरत शक्तियों का गुणगान राष्ट्रीयता भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनता है । हिंदी साहित्य की धारा निरंतर प्रवाह मान रही है । आदिकाल में राष्ट्रीयता का भाव अत्यन्त संकीर्ण था और कवि अपने आश्रयदाता के राज्य को ही अपना राष्ट्र मानकर काव्य रचना करता था । भक्तिकाल का सम्पूर्ण साहित्य सामाजिक समता एवमं समरसता को ही समर्पित रहा । कबीर और तुलसी तथा सूरदास जैसे महान कवियों ने सामाजिक विसंगतियों को नष्ट किया । रसखान, मीरा आदि ने लोकरंजन कर अपने सुरीले काव्य से लोगों को मोहित कर दिया ।

राष्ट्रीय आदर्श की स्थापना की दृष्टि से राम और कृष्ण के आदर्श को इसी काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया राम–राज्य हमारी स्वाधीनता का लक्ष्य बना ।

रीति काल में रीति बद्ध कवि सामान्यत : श्रृंगारिकता की बाढ़ में और नायिका भेद और नख–शिख वर्णन से हटकर साहित्य सृजन सुगम की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया । राष्ट्रीयता का प्रखर स्वर भूषण, लाल आदि के काव्य में मुखरित सर्वप्रथम इस युग में सुनाई पड़ा ।

भारतेंदु युग से ही हिंदी का आधुनिक काल का प्रारम्भ होता है और यहीं से आधुनिक राष्ट्र बाद का स्वर काव्य में स्पष्ट रूप से गूंजता सुनाई पड़ता है । स्वयं भारतेन्दुने, भारतदुदर्शा, लिखकर देशवासियों को देश के विषय में सोचने पर विवश किया ।
श्रीधर पाठक की कविता में भारत भूमिका, सौंदर्य, कश्मीर, सुषमा, के रूप में व्यक्त हुआ और भारतीय संस्कृतिक का गुणगान भी उन्होने किया जो राष्ट्रीयता से ओत प्रोत था । राष्ट्रीयता का प्रचंड स्वर मैथिलीशरण गुप्त की –'भारत – भारती ' में सुनाई पड़ा । राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भारतीयों को सचेत करते हुए कहा ।

हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी। [1]
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी ।।

मैथिलीशरण आधुनिक हिंदी काव्य में अपना एक विशेष स्थान रखते है उन्हे राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत होने के कारण राष्ट्रीय – कवि के रूप में भी जाना जाता है साकेत, गुरुकुल, कावा, और कर्वला, यशोधरा, जयद्रथ – वध जैसी अमर रचनाएं उन्होने हिंदी को दी । राष्ट्रीयता से ओत प्रोत दूसरा मुख्य स्वर माखनलाल चतुर्वेदी का सुनाई देता है । ' एक भारतीय आत्मा ' के उपनाम से रचना करते हुए उन्होने स्वतन्त्रता सेनानी का आदर्श स्थापित करते हुए अपने राष्ट्रभक्ति को स्वतन्त्रता सेनानी के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है ।

सर पर मौत, आँख में मस्ती मुट्ठी में मनचाही । [2]
लक्ष्य मात्र मेरा प्रियतम है,मैं हूँ इक सिपाही ।।

एक अन्य राष्ट्रीय कवि जिनकी कविता आज ओज गुणं गुम्फित होती है वे है ' राम धारी सिंह दिनकर ' उन्होने अपनी कविता के माध्यम से राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की एक नयी पहचान एवं परिभाषा दी । दिनकर की ' हिमालय ' कविता का एक अंश इस प्रकार है।

जिस के द्वारो पर खड़ा क्रान्त, [3]
सीमा पति तूने की पुकार ।
पद दलित इसे करना पीछे,
पहले तो मेरा सिर उतार ।।

उनका प्रसिद्ध काव्य – संग्रह जो स्वतंन्त्रता की लड़ाई के बीच रचा गया, राष्ट्रीय भावना का संदर्भ ग्रन्थ है । परस्पर प्रेम सौहार्द एवं हिन्दू मुस्लिम एकता का स्वर उनकी अभिव्यक्ति का मुख्य उद्देश्य रहा है । राष्ट्रीय एकता के लिए धार्मिक सदभाब पर उन्होने लिखा ।

लड़ते हिन्दू मुसलमान, भारत की आँखे जलती हैं । [4]
आने वाली आजादी की, दोनों पांखें जलती हैं।।

दिनकर मूलत : ओज के कवि हैं सामधेनी काव्य संग्रह में उनकी कविता ' आग की भीख ' उनकी राष्ट्रभक्ति का सुंदर प्रमाण है ।

दाता पुकार मेरी संदीप्ति को मिलादे, [5]
बुझती हुई शिखा को संजीवनी पिलादे ।
प्यारे स्वदेश के हित में अंगार मांगता हूँ,
चढ़ती जीवनियों का श्रृंगार मांगता हूँ ।।

तथौ

हम दे चुके लहू हैं तू देवता विभा दे, [6]
अपने अनल विशाख से आकाश जगमगादे ।।
प्यारे स्वदेश के लिए वरदान मांगता हूँ
तेरी दया विपद में भगवान मांगता हूँ ।।

उनके काव्य में राष्ट्रीयता के दर्शन पग पग पर होते है जो युवा पीढ़ी के लिए विशेषतः प्रेरणा के स्त्रोत हैं । उनकी एक और कविता ' सरहद के पार से ' में जिस राष्ट्रीयता का उद्धोष मिलता है ऐसा विरले ही कवियों में दिखाई देता है ।

थामो इसे, शपथ लो, बलि का कोई क्रम न रुकेगा, [7]
चाहे जो हो जाये, मगर येह झंडा नहीं झुकेगा ।
इस झंडे में शान चमकती है मरने वालों की,
भीमकाय पर्वत से मुट्ठी भर लड़ने वालों की ।।
इस के नीचे ध्वनित हुआ आजाद हिन्द का नारा,
वही देश भर के लहू की यहां एक हो धारा ।।

दिनकर की तरह सुभद्रा कुमारी चौहान की अनेक कविताएं जन जन में राष्ट्रीयता की भावना उजागर करने में अमोघ अस्तर के रुप में प्रमाणित हुई । ' राखी की लाज ' उनकी कविता किसी सामान्य व्यक्ति को प्रेरित कर युद्ध के वीर सिपाही के गुणों से पूरित कर सकने में सक्षम है ।

मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर के, [8]
तैयार हो जेलखाने गया है ।
छीनी है जो स्वाधीनता माँ की उसको,
वह जालिम के घर से लाने गया है ।।

'' खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी '' जैसे अनेक काव्य टुकडे आज भी किसी भारतीय को राष्ट्रीयता से भर देते हैं। जयशंकर प्रसाद के अनेक नाटकों के अतिरिक्त उनकी अनेक कविताएँ राष्ट्रीयता से ओत प्रोत हैं । चंद्रगुप्त नाटक की ये पंक्तियाँ राष्ट्रीयता का उद्घोष करने में पर्याप्त सक्षम है ।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती [9]
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतन्त्रता पुकारती

इसी तरह निराला की अनेक कविताएं ' राम की शक्ति पूजा ' आदि राष्ट्रीयता के स्वर से परिपूर्ण है । भारतवासियों के मनों को राष्ट्रीयता के स्वर से सदैवं गुजायमान रखती है ।
हिंदी में असंख्य कवियों ने राष्ट्र का मान अपने अपने ढंग से किया है । किसी ने इसकी माटी का अभिनन्दन किया तो किसी ने यहाँ कलाओं और साहित्य के द्वारा परोक्ष रूप से अभिव्यक्ति की। किसी ने प्रत्यक्ष रूप से शहीदों की वीरता का गुणगान किया तो किसी ने भारत के गौरवमय स्वर्णिम इतिहास के माध्यम से राष्ट्र के प्रति अपना शीश झुकाया ।

संदर्भ सूची

1. मैथिलीशरण गुप्त – भारत – भारती
2. माखनलाल चतुर्वेदी – भारतीय आत्मा
3. राम धारी सिंह दिनकर– हिमालय
4. राम धारी सिंह दिनकर– सामधेनी काव्य संग्रह
5. राम धारी सिंह दिनकर– आग की भीख सामधेनी काव्य संग्रह पृ0 136
6. राम धारी सिंह दिनकर– आग की भीख सामधेनी काव्य संग्रह पृ0 137
7. राम धारी सिंह दिनकर– आग की भीख सामधेनी काव्य संग्रह पृ0 67
8. सुभद्रा कुमारी चौहान – राखी की लाज पृ0 47
9. जयशंकर प्रशाद – चन्द्रगुप्त पृ0 71